edit:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:26 PM Page 190

जब नानाजी राष्ट्र के नानाजी बनते चले गये

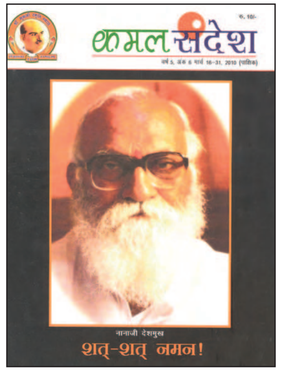

... नानाजी नहीं रहे। यह हम नहीं मानते। हमारी मान्यता है कि मरता वह है जो कुछ करता नहीं। वह व्यक्तित्व कभी नहीं मर सकता जो जीवन भर कुछ न कुछ राष्ट्र के लिये करता रहा हो। नानाजी "काया" से हम सभी के बीच नहीं रहे पर उनकी "छाया" सदैव अजर और अमर रहेगी। हम सभी उनके विचारों को सदैव स्मरण करते रहेंगे, जो उन्होंने समाज और राष्ट्र को दिया। ...

नवलय अनुबोध

जब-जब कबीर जाते हैं .....

कबीर अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए ताना-बाना बुनते हैं। आप समझें तो ठीक, न समझें तो ठीक। ताना-बाना बुनना जारी है। ऐसे ही नई-नई संरचनाओं और कार्यों को बुनते हुए नानाजी देशमुख चले गए। अपनी "साखी" करते हुए, उनकी वही साखी जो विकास की धारा के रूप नए-नए कार्यक्रमों को लेकर लावें की तरह फूटती थी। जो साखी समझे, समाज में लग गए। जो उसे पहले ही दिन से "उलटवांसी" समझे थे, "दिल्ली दूर है' को "दिल्ली पास है' करने में लगे हैं और लगे ही रहेंगे।

मैं अन्य कई लोगों की तरह उनसे नजदीकी का दावा नहीं कर सकता, क्योंकि मैं उन दोनों समूहों में नहीं आता हूँ। कबीर के जाने के बाद जैसे उनके अनुयायी दो समूहों में बंट गए थे, वैसे ही नानाजी के श्रद्धालु भी आज एक पंक्ति के दोनों ओर खड़े हैं। दोनों समूहों के सामने अपनी-अपनी कल्पना की रेखाएं हैं। नानाजी ने विकास की दृष्टि को रखते हुए जो रेखा खींची थी, उसकी ओर किसी का ध्यान नहीं है। चित्रकूट विश्वविद्यालय बनते समय उनका भोपाल प्रवास हुआ था, मुझे आज भी उनके वे शब्द याद हैं "मनुष्य को अपनी गलती से शिक्षा लेकर आगे का पाथेय चुनना चाहिए।" इस दौरान गोंडा में किए गए प्रयोग और उसके फलितार्थ से मिली शिक्षा से नई ऊर्जा प्राप्त कर चित्रकूट संरचना की बात स्वीकार की थी।

भारतीय जनसंघ के इस शिल्पकार को राजनीति ने भारतीय जनता पार्टी से दूर रखा। सांसद से सरकार तक जाने वाले अवसर को जिन्होंने रोका वे आज कहां हैं? और उनके कीर्ति किरीट में लगे पंख शावद नानाजी देशमुख के कार्यों की संज्ञा का भी मुकाबला नहीं कर पायेंगे, कभी। राजनीति में आने वाला व्यक्ति समाज सेवा करने आया हूँ, कहता थकता नहीं है। नानाजी समाज सेवा के ताने-बाने लगातार बुनते थे। हर क्षण एक नया प्रयोग, हर भेंट पर एक नया प्रकल्प और उसकी योजना।

कुछ लोग सुनते थे, कुछ लोग गुनते थे और कुछ चलते भी थे। जो ऐसा करते थे उनका आज देश में एक बड़ा मुकाम है। नानाजी ने देश में विकास को एक नया आयाम दिया है। राजनीति ने चित्रकूट प्रयोग का सरकारीकरण किया। अब दूसरा राजनैतिक विचार इसे कोई और दिशा दे अन्य कोई और दिशा दे। दिशा तो वही होगी जो नानाजी दिखा गए, मार्ग और वाहन पृथक-पृथक हो सकते हैं।

पढ़ा है, सुना है कबीर जब-जब जाते हैं तो उनके अनुयायी बंटते हैं, विचार नहीं, क्योंकि विचार तो अक्षर होते हैं। नानाजी देशमुख के प्रयोग भी "अक्षर' हैं, अक्षर ही रहेंगे। श्रद्धांजलि।